कमाल कैसे होगा?

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

अब परमात्मा की एक लाइन है कि तुमने हमसे वायदा किया था कि जब आप इस धरती पर आयेंगे तो हम आपको ही देखेंगे, आपको ही सुनेंगे, आपको ही पढ़ेंगे, आपके ही साथ रहेंगे, आपके साथ खायेंगे, आपके साथ जियेंगे आदि आदि। लेकिन ऐसा क्या हो गया कि आज हम बहुत कुछ भगवान के बारे में भी जानते हैं, अपनी क्रियेशन के बारे में भी जानते हैं, विश्व कैसे चल रहा है उसके बारे में भी थोड़ा बहुत जानते हैं, फिर भी हमसे कमाल नहीं हो रहा है। इसी का सूक्ष्म कारण हम थोड़ा जान लेते हैं कि ऐसा क्या करें कि जिससे हमारे से कमाल हो। आज समस्या ये है कि कलियुगी आत्माओं का प्रभाव कहीं न कहीं हम आत्माओं के ऊपर भी पड़ जाता है। हम बहुत सालों से इस दुनिया में रहे हैं और अभी भी इसी दुनिया में लीड कर रहे हैं। तो एक से दो घंटा या पाँच घंटा या तीन घंटा ज़्यादा से ज़्यादा समय हम डिवोट करते हैं परमात्मा के साथ, बाकी का सारा समय हम खाली आत्माओं या जिनके पास कोई काम नहीं है के साथ, कलियुगी आत्माओं के साथ बिताते हैं। आज सोशल मीडिया बहुत एक्टिव है। जब भी खोलो, कुछ न कुछ आपके सामने आ जाता है। और आ जाता है तो उसमें कुछ न कुछ सुनने को, देखने को, पढ़ने का हमें मिल जाता है। उसमें आज के जो कलियुगी मनुष्यों की स्थिति है, कई हैं जो बहुत अच्छे भक्त है, कई बहुत अच्छे वक्ता हैं, बहुत अच्छे लीडर हैं, उनको आपको सुनने का मन करता है, बहुत अच्छे कवि हैं, बहुत अच्छे शायर हैं, और वो जो भी आपको सुनाते जाते हैं, आपका मन भी उस ओर आकर्षित होता है। अब होता क्या है कि हम ज़्यादा से ज़्यादा जो भी देखते या सुनते हैं वो पूरी तरह से हमारे मन पर छपता चला जाता है। और आने वाले समय में वो पूरी तरह से हमपर हावी हो जाता है। इस चीज़ का प्रभाव देखते हैं कि ये तो हमारा खुद का डेवलप किया हुआ है, हमने ही खुद अपने में ये रोग विकसित किया है (खासकर वो आत्मायें जो परमात्मा के साथ जुड़ी हुई हैं, परमात्मा के लिए कार्य कर रही हैं उनके लिये ये बात चल रही है)। जब वे कहीं स्टेज पर या कहीं पर किसी से मिलेंगे, जुड़ेंगे, बात करेंगे तो उनके अंदर सूक्ष्म रूप से उन आत्माओं का भी प्रभाव झलकेगा जैसे उन्होंने उन आत्माओं को सुना होगा, ये वाली आत्मायें या कलियुगी आत्मायें कैसे बात करती हैं, वो आत्मा, वो कवि, या वो शायर, या वो नेता कैसे बात करता है, उस चीज़ को ज़हन में रखते हुए कहीं न कहीं हम बात करते हैं। हो सकता है कोई इस बात को न भी माने, कोई बात नहीं, लेकिन बात तो सही है। क्योंकि सूक्ष्म रूप से उनका प्रभाव इतना ज़बरदस्त हमारे मन के ऊपर है कि वो हमारे में झलकता है। हमारे मन में भी झलकता है, हमारी वाणी में भी झलकता है, हमारे कर्म में भी झलकता है। उसके कारण हम उनसे कुछ अलग नहीं दिखाई देते, हमारी वृत्ति में पूरी तरह से परमात्मा नहीं भरा हुआ है। जैसे वो लोग अपना पूरा समय कवितायें बनाने में या अपना क्रियेटिव वर्क करने में लगाते हैं, तो हमारा भी पूरा समय ईश्वरीय कार्य में ही जाना चाहिए। अब हमें खुद ही चेक करना है कि मेरा पूरा समय ईश्वरीय कार्य में ही जाता है या कहीं न कहीं और जगह पर जुड़ा होता है। हम कहते हैं कि हमारे पास टाइम नहीं है, लेकिन आप अपने आप को चेक करेंगे तो पता चलेगा कि आपके पास टाइम ही टाइम है। इतना समय है कि आप उस समय का सदुपयोग भी नहीं कर पायेंगे। क्योंकि हमारा ज़्यादा समय इन आत्माओं को देखने, सुनने, सोचने, पूरा ही इन बातों में निकल जाता है, ये आज का सिनारियो है। ये जो पूरी बाते हैं, इन बातों को कहने का भाव सिर्फ इतना है कि अगर हमसे कोई कमाल नहीं हो रहा है, तो कहीं न कहीं वो चीज़ हमारे साथ जुड़कर चल रही है जो आज कलियुग में चल रही है। जो आज दुनिया की सभी मनुष्यात्मायें कर रही हैं वो हम भी कर रहे हैं। तो समय की मांग यह है, समय यह कहता है कि अगर कुछ हद तक हम भी अपने आप को इस तरह से परमात्मा के साथ जोड़ लें जो हमारे लिए ही सिर्फ आया हुआ है, हमें ही सिर्फ बदल रहा है, हमें ही सिर्फ ज्ञान दे रहा है, हमें ही सिर्फ समझा रहा है, किसी और आत्मा के साथ उसका कोई कनेक्शन नहीं है। उसे पता है कि दुनिया के मनुष्य परमात्मा को नहीं पहचान पा रहे हैं, लेकिन अगर हम पहचान पा रहे हैं तो हमारे में वो सौ प्रतिशत होना चाहिए कि सच में हम परमात्मा के बच्चे हैं। यदि और कोई भी कार्य हम कर रहे हैं इस कार्य के अलावा तो ये अमानत में खयानत है। अगर हम एक शब्द 'परमात्मा' को यूज़ करते हैं, तो वो कार्य निश्चित रूप से हो जाता है। तो आप सभी कभी बैठ के सोचना कि हमसे कमाल क्यों नहीं हो रहा है, क्योंकि हम कमाल वाला वो कार्य नहीं कर रहे हैं जो करना चाहिए। सम्पूर्ण रीति उसपर फोकस करना, सम्पूर्ण रीति उसे ही सुनना, सम्पूर्ण रीति उसे ही देखना, उससे ही बातचीत करना, परमात्मा के साथ रहना, परमात्मा को हर समय, हर पल, हर क्षण यूज़ करना, उसी की बातें करना, उसी की बातें पढ़ना, वो ईश्वरीय नशा जब हमारे अंदर होगा तो हमारी आँखों, हमारे मुख से, हमारे वायब्रेशन्स से सबको नज़र आयेगा और उसके आधार से हम कमाल करने के लायक बनेंगे। परमात्मा के महावाक्यों में कई बार आया है और आता रहता है कि तुम आत्मायें मिक्स्ड हो, मिक्स्ड का मतलब हुआ, थोड़ा यहाँ का सुन लेते हो, थोड़ा बाहर का भी सुन लेते हो और जब देखते हो कि स्टेज पर वो आत्मायें बड़ा अच्छा बोल रही हैं तो उनका भी थोड़ा बहुत आधार लेकर हम बोलना शुरू कर देते हैं। वो मिक्स्ड वाला प्रभाव आपके प्रभाव को कम कर देता है। थोड़ी देर के लिए तो वो खुश हो जायेंगे, लेकिन कहीं न कहीं उनके अंदर भी ये चलने लग जाता है कि ये लोग भी हमारी तरह ही बातें कर रहे हैं, थोड़ी बहुत स्पीरिचुअलिटी या थोड़ा बहुत आध्यात्मिकता का पुट है। कुछ इनका खुद का इजाद किया हुआ है और कुछ बातें इधर उधर से ली हुई हैं। तो आप भी इस बात को अच्छी तरह से सोच लो, सुन लो, देख लो, तो उसको करने में आपको आसानी होगी, सुनने में आसानी होगी, देखने में आसानी होगी और पढ़ने में भी आसानी होगी। कुछ न कुछ ऐसा करें हम समय के साथ कि परमात्मा के उस हुनरमंद बच्चों के रूप में उभर कर आयें कि सच में ये भगवान के साथ हैं। लेकिन ये तब तक नहीं होगा जब तक हम वो वाला दाव नहीं छोड़ेंगे, जो इस दुनिया के लोग कर रहे हैं। अगर हमें सच में कमाल दिखानी है, सच में कुछ नया और दुनिया से बहुत ज़्यादा अलग करना है तो उनकी तरह ही कुछ ऐसा अलग तरह का एक चीज़ पर, एक स्थान पर, एक स्थिति से फोकस करके काम करना पड़ेगा तब जाकर हमारे से कुछ कमाल होगा, और वो कमाल स्थायी होगा।

दुनिया में कहा जाता है कि किसी चीज़ को फोकस करो तो जाकर सफलता मिलती है। किसी भी ओलम्पिक खिलाड़ी को कोई मेडल जीतना होता है तो वो एक दिन में चौबीस घंटे लगाता है, प्रैक्टिस करता है और चौबीस घंटे में वो यही फोकस करता है कि वो इस स्टेज को अचीव कर रहा है। और हर तरफ से वो अपना ध्यान हटा लेता है। लेकिन जैसे ही वो और और चीज़ों पर ध्यान देता है, उसका फोकस हट जाता है। क्योंकि लड़ाई दो मिनट के लिए है, लेकिन अभ्यास कई सालों का है। दो मिनट में बाज़ी पलट जाती है। इसी तरह हमारा जीवन भी है। हमसे तभी कमाल होगा जब हम हमेशा बिना इधर-उधर देखे कार्य करेंगे।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दें

मन की बातें

- राजयोगी ब.कु. सूर्य

प्रश्नः मैं प्रदीप शर्मा जयपुर से। मेरा सवाल है कि जैसे कि हमने विद्वजनों से सुना है कि 84 लाख योनियां होती हैं और मनुष्य पशु-पक्षी की योनि में भी जाता है। तो क्या पशु-पक्षी भी मनुष्य योनि धारण करते हैं कभी?

उत्तरः नहीं। जैसे गेहूं का बीज होता है, हम गेहूं के बीज से ये उम्मीद नहीं कर सकते कि अमरूद का पेड़ पैदा हो जायेगा। ये आत्मायें अलग-अलग बीज हैं और जो जिसका बीज है वो वही पैदा करेगा। किसी दूसरी योनि में नहीं जा सकता।

प्रश्नः मैं शिला तिवारी, जबलपुर से हूँ। मैं पूछना चाहती हूँ कि मेरा बेटा 25 साल का 6 महीने पहले इस दुनिया में नहीं रहा, तो मुझे अपने मन की शांति चाहिए। मैं क्या करूं?

उत्तरः निश्चित रूप से आपके लिए ये बड़ी बात है। किसी का जवान बेटा मृत्यु को प्राप्त हो जाये तो माँ पर तो भारी पड़ता है, सब समझ सकते हैं। लेकिन मृत्यु एक ऐसा सत्य है, जिसको कोई बदल नहीं सकता। इसलिए अब आप ये जानकर कि वो भी आत्मा है, उसने अब पुनर्जन्म ले लिया है दूसरी जगह। अब आप मेडिटेशन करके चित्त को थोड़ा शांत कीजिए। ताकि आपके शांति के वायब्रेशन उसको भी पहुंचे। मेडिटेशन ही इसका एकमात्र तरीका है, जो मनुष्यों को ऐसी परिस्थिति में धैर्य देता है, बैलेन्स लाता है जीवन में और चित्त को शांत करता है। आप शुरू करो। बहुत अच्छा योगाभ्यास आप सीख लो तो बहुत जल्दी आप इससे बाहर आ जायेंगी।

प्रश्न : मैंने बचपन से पेरेन्ट्स के साथ सेन्टर जाना शुरू किया। तब मुझे ज्ञान समझ नहीं आया था, क्योंकि बहुत छोटा था। और अब काफी सालों के बाद मुझे ज्ञान और योग का महत्व समझ में आया है तो वो सब बातें सुनकर मुझे नशा नहीं चढ़ता, सॉल कॉन्सेस स्थिति में स्थित नहीं हो पाता। कृप्या बतायें कि कैसे मैं इसका अनुभव करूं?

उत्तरः बचपन का समय बहुत सुन्दर होता है। बुद्धि क्लीन और मन भी बहुत स्वच्छ। सबकॉन्शियस माइंड ज़्यादा पावरफुल। अभी वो समय बीत गया और आप बड़े हो गये हैं। और तब से लेकर अब तक आपने अपने में क्या क्या भर लिया। नेगेटिविटी आ गई। कलियुग का कितना प्रभाव आपने ऊपर डाल लिया है। इसीलिए उन बातों में ज़्यादा रस नहीं आ रहा है। इसलिए आप उस चीज़ को तो भूल जायें। अब एक सुन्दर शुरूआत करें। रोज़ ईश्वरीय महावाक्य सुनें और जो ईश्वरीय महावाक्यों में भगवान हमें करने को कहते हैं, उसको रोज़ फॉलो करें। रोज़ महावाक्य सुनकर एक छोटी सी प्लानिंग कर लें कि आज मुझे ये-ये अभ्यास करने हैं। बैठकर भी राजयोग का अभ्यास करें। 10-10 मिनट भी 2,3 बार बैठकर अच्छा अभ्यास करेंगे तो सबसे पहला काम होगा जो नेगेटिविटी भर गयी है, वो क्लीन होगी। और फिर आपको अनुभव होने शुरू हो जायेंगे।

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

प्रश्न : हमारे एक परम मित्र हैं। उनको कई दिनों से नींद नहीं आ रही है, इसलिए वो एकसाथ 8-9 नींद की गोलियां लेते हैं। कुछ दिनों से वो ऑफिस भी नहीं जा रहे हैं, उनको ये भ्रम भी है कि उनके घर में कोई नेगेटिव साये का प्रभाव है। उनका बेटा भी पढ़ाई नहीं कर रहा है, दिनभर दोस्तों के साथ घूमता रहता है, उनकी वाइफ भी बहुत दुःखी रहती है, कृप्या बतायें कि क्या किया जाये?

उत्तर : 8-9 नींद की गोली खाना माना ब्रेन का डैमेज होना। मुझे भी यही लगता है कि ब्लैक मैजिक किसी ने करा दिया है, क्योंकि ये सब चीज़ें आजकल बहुत हो रही हैं। क्योंकि लड़का भी ऐसी नेगेटिव राह पर ना चलता या फिर ब्रेन की स्थिति अनबैलेंस हो गई है, क्योंकि आजकल मानसिक बीमारियां ही इतनी हो गई हैं संसार में। लेकिन गोलियां इसका समाधान नहीं है। क्योंकि जो व्यक्ति 8 गोलियां खाकर उठेगा, वो बिल्कुल डल होगा। काम पर जाने को उसका मन ही नहीं करेगा। बैठा भी होगा तो ऐसे बैठा होगा, बिल्कुल डल। इसीलिए आप पानी को चार्ज कर रोज़ अपने घर में छिड़कें। सवेरे आप जब भी उठें और सोने से पहले मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ 108 बार लिखें। उससे उन्हें जागृति आयेगी। कोई ऐसा बुरा प्रभाव है जो किसी ने करा दिया है, तो उससे मुक्त हो जायेंगे। हमारे यहाँ शिवबाबा के, जिनको हम कास्केड कहते हैं, ओवेल शेप के बल्ब मिलते हैं बड़े। वो इनको अपने घर में लगातार जलाना चाहिए। चाहे दिन हो या रात। उससे जो वायब्रेशन्स फैलते हैं, देखिये वो सुप्रीम की इमेज है, उससे जो एनर्जी फैलती है, उससे ये जो नेगेटिविटी है वो नष्ट हो जाती है।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com